2. रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'केशव कठिन काव्य के प्रेत हैं' प्रकाश डालिए।

3. सूरदास का भ्रमरगीत सार ज्ञान प्रर प्रेम की विजय का सुंदर उदाहरण है स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

बिहारी की बहुज्ञता पर प्रकाश डालिए।

4. भूषण के काव्य में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना से आप क्या समझते हैं। (15)

अथवा

'प्रेम का मार्ग अत्यंत सीधा है' इस कथन के आधार पर घनानंद के काव्य में व्यक्त प्रेम को व्याख्यायित करें।

5. टिप्पणी कीजिए **(कोई दो)** (2×9=18)

(क) सुन्दरकाण्ड का नामकरण

(ख) सूरदास के पदों का काव्य शिल्प

(ग) बिहारी के काव्य और गागर में सागर भरने की क्षमता

(घ) घनानंद के काव्य की भाषा-शैली

(ङ) भूषण के काव्य में वीर रस

(च) केशव का काव्य-शिल्प

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1121 **L**

Unique Paper Code : 2052101201

Name of the Paper : हिंदी कविता : सगुण भक्ति एवं रीतिकालीन काव्य

Name of the Course : **बी.ए. हिंदी विशेष – DSC**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्न पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) नाथ दैव कर कवन भरोसा। सोषिअ सिन्धु करिअ मंन रोसा।।
कादर मन कहूं एक अधारा। दैव दैव आलसी पुकारा।।
सुनत बिहसी बोले खघुबीरा। ऐसेहिं कब धरहु मन धीरा।।
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई। सिन्धु समीप गए रघुराई।।
प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई। बैठे पुनि तट दर्भ डसाई।।
जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए। पाछें रावन दूत पठाए।।

अथवा

तड़ाग नीरहीन ते सनीर होत केशोदास, पुंडरीक झुंड भौंर मंडक्लीन मंडही।

तमाल वल्लरी समेत सूखि सूखि कै रहे, ते बाग फूलि फूलि कै समूल सूल खंड ही।।

चितै चकोरिनी चकोर मोर मोरती समेत, हंस हंसिनी सुकादि सारिका सबै पढ़े।

जहीं जहीं बिराम लेत राम जू तहीं नहीं, अनेक भांति के अनेक भोग भाग सो बढ़े।।

(ख) आयो घोष बड़ो व्योपारी।

लादि खेप गुन ज्ञान-जोग की ब्रज में आन उतारी।।

फाटक दैकर हाटक माँगत भोरै निपट सुधारी।

धुर ही तें खोटो खायो है लये फिरत सिर भारी।।

इनके कहे कौन डहकावै ऐसी कौन अजानी।

अपनो दूध छाँडि को पीवै खार कूप को पानी।।

ऊधो जाहु सबार यहाँ तें बेगि गहरु जनि लावौ।

मुँह माँग्यो पैहो सूरज प्रभु साहुहि आनि दिखावौ।।

अथवा

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।

जा तन की झाँई परै, स्यामु हरित-दुति होइ।।

जब-जब वै सुधि कीजिये, तब-तब सब सुधि जाँहि।

आँखिनु आँखि लगी रहैं, आँखें लागति नाहि।।

(ग) रूपनिधान सुजान सखी जब तैं इन नैननि लेकु निहारे।

दीठि थकी अनुराग-छकी मति लाज के साज-समाज बिसारे।

एक अचंभौ भयो घनआनँद हैं मित ही पल-पाट उघारे।

टारैं टरैं नहीं तारे कहूँ सु लगे मनमोहन-मोह के तारे।।

अथवा

साजि चतुरंग सैन अंग में उमंग धरि

सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है

भूषण भनत नाद बिहद नगारन के

नदी-नद मद गैबरन के रलत है

ऐल-फैल खैल-भैल खलक में गैलं गैल

गजन की ठैल-पैल सैल उसलत है

तारा सो तरनि धूरि-धारा में लगत जिमि

थारा पर पारा पारावार यों हलत है